मोरंगे

नवम्बर – दिसम्बर 2023

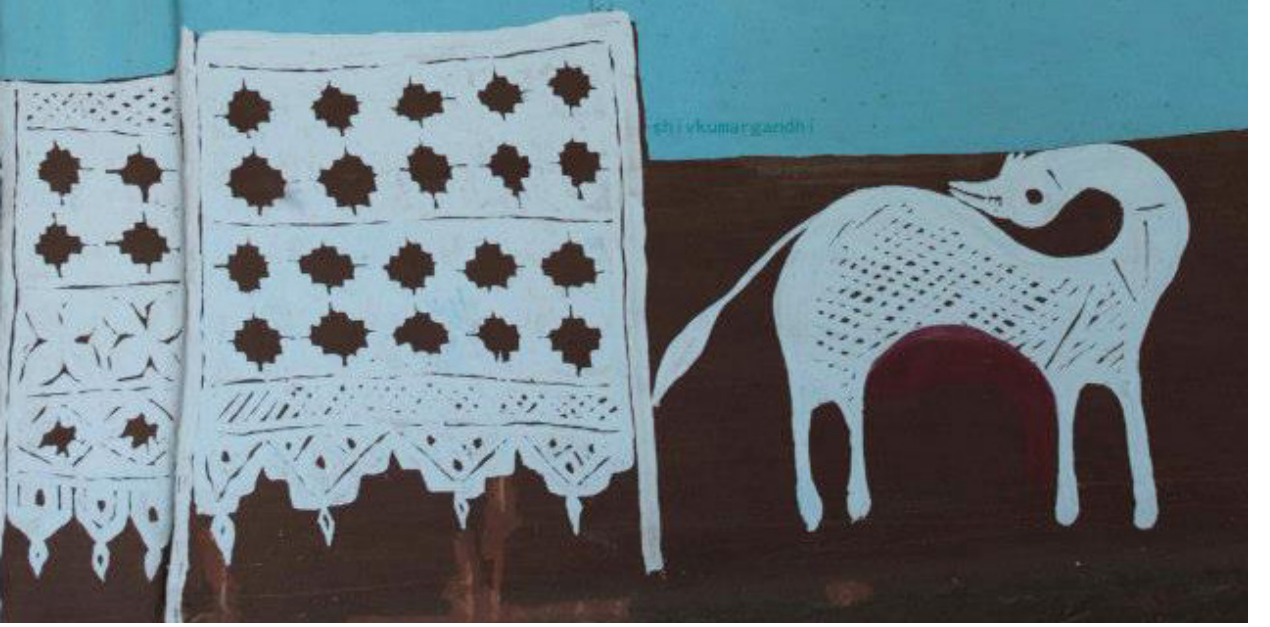

सम्पादन : प्रभात
डिज़ाइन : खुशी
आवरण फोटो – शिवकुमार गाँधी
बैक कवर फोटो – मदन मीणा
वितरण : लोकेश राठौर
वर्ष 15 अंक 161–162
'मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
H-1, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर,
मानटाउन, सवाईमाधोपुर
राजस्थान
322001

प्रबंधन
विष्णु गोपाल,
निदेशक
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

इस बार

खिड़की

पद – समय बदलगौ भाएला

गीत-कविताएँ

कौआ

मेरी बकरी

धुक–धुक

गिर गए खम्भे

पिऊ–पिऊ

चटक–मटक

कहानियाँ

रंग–बिरंगे पिल्ले

खरगोश

बाप और बेटा

सपना

याद की धूप-छाँव में

खेती

शिक्षा के ग्रामीण केन्द्र की ओर

उमंग जगनपुरा की किशोरियों की रचनाएँ

बात लै चीत लै

चापड़े पापड़े पर जा पड़े

बतरस

मधुमक्खी से बातचीत

मच्छर से बातचीत

पहेलियाँ

समय बदलगौ भाएला

समय बदलगौ भाएला जमानौ भारौ घाती रे
भैया कौ भैया नहींअ साथी रे।

1

भाई समय बड़ी बलवान है समय–समय की बात
कोई समय मं दिन बड़ा कोई समय मं रात
है समय–समय की बात समय बलधारी
राजा हो जावै रंक, रंक नृप होय भिखारी
समय खोटो आ गयौ भैया
झूठे कर रहे मौज डूब रही साँचे की नैया
बणैं वे नेता मुछमुण्डा
बिरले रह गए सजन जगत में भौत भए गुण्डा
समय बदलगौ भाएला जमानौ भारौ घाती रे
भैया कौ भैया नहींअ साथी रे।

2

तेरे सुख से मैं दुखी, मेरे से कोई और
ये दुख ब्यापौ जगत मं सो तुम देख लेऔ सब ठौर
प्रेम ऊपर से करते हैं
देख परायौ सुक्ख दुष्ट भीतर से जलते हैं
लगै कोई भाई कै धक्का
ऐसे राजी होंय लग्यौ तेंदुलकर कौ छक्का
समय बदलगौ भाएला जमानौ भारौ घाती रे
भैया कौ भैया नहींअ साथी रे।

3

यज्ञ हवन जादा होते पर फिर नहीं कोई दानी क्यों
कथा–भागवत घर–घर होती फिर भी सब अज्ञानी क्यों
रात दिनां सतसंग सुणै पर फिर भी सठ अभिमानी क्यों
सबके घर मं रामायण है फिर भी बेईमानी क्यों?
समय बदलगौ भाएला जमानौ भारौ घाती रे
भैया कौ भैया नहींअ साथी रे।

धवले राम मीना

(इस पद की रिकॉर्डिंग अप्रेल 2013 में लालारामपुरा गाँव में मदन मीना द्वारा की गई।)

खिड़की

गीत कविताएँ

धुक धुक

रेल चली धुक धुक
कहीं कहीं रुक रुक

रेल में थे नाना
लाए थे खाना
खा रहे थे चुप चुप
रेल चली धुक धुक

रेल में थी नानी
लाई थी पानी
देख रही थी टुक टुक
रेल चली धुक धुक

रेल में थे बच्चे
छोटे बड़े अच्छे
खेल रहे थे लुक छुप
रेल चली धुक धुक

विजय गर्जुर,
कक्षा – 8, समूह – कमल,
गिर्राजपुरा।

प्रेमचंद कोली, शिक्षक, उमंग, श्यामपुरा

कौआ

कौआ अक्सर आता है
मांस का टुकड़ा लाता है
पेड़ पे बैठ के खाता है
फिर उसको जो गाने आते
गिन गिन करके गाता है

राधिका महावर, कक्षा–5, अल्लापुर।

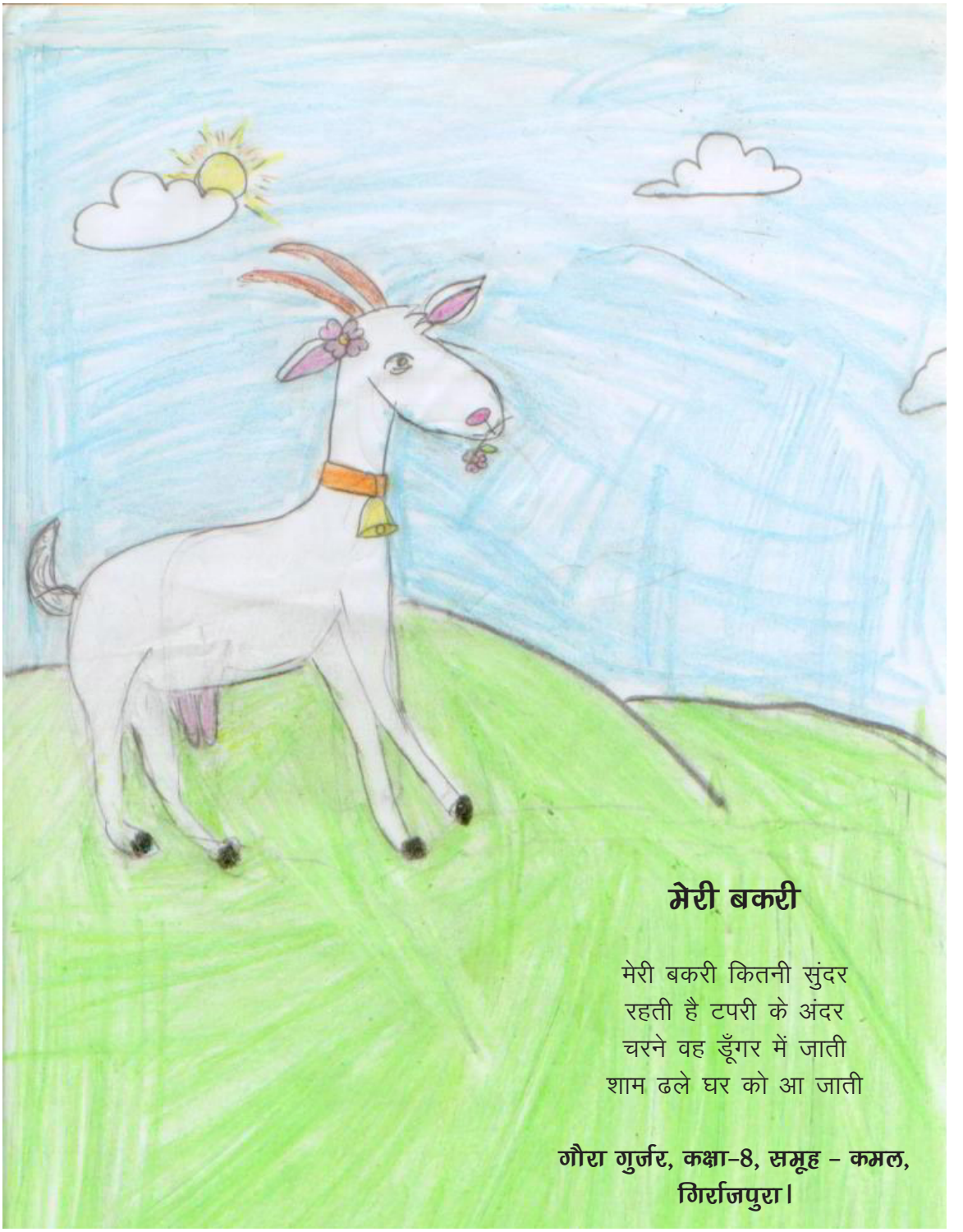

भोला शंकर वर्मा, शिक्षक, उमंग, जगनपुरा।

गिर गए खम्भे

एक था नाई
करता था डाई
डाई थी लाल
मैंने कहा–काट दे बाल
बाल थे लम्बे
कटे तो लगा जैसे
गिर गए लाइट के खम्भे
दोस्त ने कहा
देखके मुझको
क्या हो गया तुझको
मैंने कहा– कुछ नहीं यार
गिर गए खम्भे
टूट गए तार

विनोद गुर्जर, कक्षा-5,
समूह-सूरजमुखी,
गिर्राजपुरा।

पीऊ पीऊ

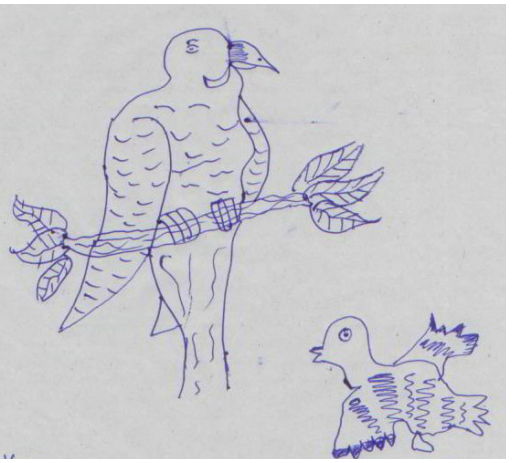

पपीहा बोले पीऊ पीऊ
छिपकर बोले पीऊ पीऊ
दिखकर बोले पीऊ पीऊ
रुक कर बोले पीऊ पीऊ
रहा न गया मुझसे
मैं भी बोला– पीऊ पीऊ

भोलाशंकर, शिक्षक, जगनपुरा।

रवि सिंह गुर्जर, कक्षा –8, गिर्राजपुरा

चटक मटक

हुई परीक्षा खटक खटक
रिजल्ट आया मटक मटक
साँसें गई अटक अटक
फेल हो गए चटक मटक

मम्मी ने पीटा फटक फटक
पापा ने मारा पटक पटक
दादी के पास गए सटक सटक
तब बच पाए चटक मटक

सुमन मीना, फेलो, पुस्तकालय, जगनपुरा।

कहानियाँ

रंग–बिरंगे पिल्ले

एक कुतिया थी। उसके तीन बच्चे थे। कुतिया रोज स्कूल में आती थी। जब हमारी लंच होती थी तो हम उसे रोटी खिलाते थे। जब कुतिया रोटी खा लेती थी तो वह जाकर अपने बच्चों को दूध पिलाती थी। जब हमारी छुट्टी होती थी तब कुतिया हमें छोड़ने गाँव तक जाती थी। और जब कुतिया को भूख लगती थी तो वह हमारे पास आकर पूँछ हिलाती थी। हम उसे रोटी का टुकड़ा खिलाते थे। कुतिया हमें परेशान नहीं करती थी। कुतिया के पिल्ले रंग–बिरंगे थे। हमें उन्हें खिलाने में और उनके साथ खेलने में बड़ा मजा आता था।

धीरे–धीरे कुतिया के पिल्ले बड़े होने लग गये। एक दिन तो एक पिल्ले ने हद ही कर दी। हमारी कक्षा की चटाई उठाते समय मेरी कॉपी वहाँ रह गई तो पिल्ले ने उसे मुँह में उठाया और मेरे पास ले आया। सारे बच्चे उसे देखकर आश्चर्य चकित रह गये। हम सब पिल्लों को कूर–कूर कहकर बुलाते थे। तब सारे पिल्ले दौड़ कर हमारे पास आ जाते थे।

ऐसा था हमारा स्कूल। ऐसी थी वह रोज स्कूल आने वाली कुतिया। और ऐसे थे उसके रंग–बिरंगे पिल्ले।

(सूरज समूह के बच्चों द्वारा बनाई गई कहानी, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।)

खरगोश

बहुत रात हो गई थी। तारे टिमटिमा रहे थे। कुत्ते भौंक रहे थे। मैं सो रही थी। मैंने देखा एक नन्हा सा खरगोश दरवाजे से अंदर आ रहा था। जैसे ही खरगोश अंदर घुसने लगा घर का दरवाजा हिला। किवाड़ से किसी चीज के टकराने की आवाज आई। मेरी नींद खुल गई। मैं अचानक डर गई कि इतनी रात को दरवाजे को कौन खटखटा रहा है। मैंने देखा तो दरवाजे के पास कोई भी नहीं था। मैंने दरवाजे के पास में भी देखा और दरवाजे के बाहर भी देखा तो कहीं कुछ नहीं था। तभी दिखा कि एक टोकरी रखी हुई थी। खरगोश बदमाश उसके नीचे जाकर छिप गया। मैं फिर दरवाजे के पास गई। खरगोश टोकरी से निकल कर मेरे पास आ गया। मेरे पैरों में ही आकर बैठ गया। मैं उसको रसोई में ले गई। फिर उसको दूध पिलाया। दूध पिलाते ही मैंने उसको फर्श पर छोड़ दिया। फिर वो मस्ती करने लगा तो उसको देखकर मेरा मन ऐसा करने की ऐसा ही खरगोश में भी पाल लूँ।

संतरा नायक, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

फोटो – ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के संग्रह से।

बाप और बेटा

समंदर के किनारे एक घर था। उसमें एक बेटा और बाप रहते थे। एक दिन बेटे ने बाप से कहा–'मुझे शहर में पढ़ने जाना है।' बाप महा आलसी था। उसने कहा–'जाना है तो जा। मुझे मत बता।'

बेटे ने कहा–'जा रहा हूँ।'

बाप ने कहा–'जा।'

बेटा चला गया। उसने रहने के लिए कमरा खोजा। मकान मालिक ने कहा–'पाँच हजार रुपये महीने किराया होगा।'

लड़के ने बोला–'पढ़ लिखकर जब नौकरी लगूँगा, पाँच लाख रुपये एक साथ दे दूँगा।'

मकान मालिक ने कहा–'ठीक है रह ले।'

फिर वो लड़का स्कूल में जाकर एक शिक्षक से मिला। शिक्षक ने कहा–'यहाँ तो पढ़ाई की फीस दस हजार रुपये साल है।'

लड़का बोला कि 'जब मैं नौकरी लगूँगा तो फीस के जितने भी पैसे जुड़ेंगे हर महीने के तन्ख्वाह से आपको दे दिया करूँगा।'

शिक्षक ने देखा कि लड़का समझदार है। काफी होशियार है। नौकरी लग ही जाएगा। रिटायरमेंट के बाद मैं इसी के सहारे जी लूँगा।

लड़का अब शहर में रह रहा है। पढ़ रहा है। और उसका महाआलसी बाप समुंदर से मछली पकड़कर खाने के अलावा कुछ भी नहीं कर रहा है।

नमन माली, कक्षा–6, हरियाली समूह, फरिया।

सपना

एक बार एक गरीब किसान था। उसका एक छोटा सा खेत था। उसमें वह सब्जियाँ उगाता था। सब्जियाँ बेचकर अपनी बेटी को पढ़ाता था। बेटी ने बारहवीं पास कर ली। वह बहुत खुश थी। अब उसे कॉलेज जाना था। वह कॉलेज में गई, पढ़ाई की। कुछ दिनों बाद परीक्षा थी। उसने अपने आप से कहा–'सपने तो सभी देख लेते हैं। पर उन्हें पूरा करने के लिए पूरी तरह से मेहनत बस कुछ ही लोग करते हैं।' तभी वह उठी। वैसे उसने सुबह से रात के बारह बजे तक परीक्षा की तैयारी की थी। पर उसकी नींद लग गई और वह सपने देखने लगी। पर जैसे ही उसे अपनी ही बात याद आई वह पढ़ने ही वाली थी कि लाइट चली गई। उसने मोमबत्ती जलाई और पढ़ना चालू किया। गर्मी के कारण उसे पढ़ने में कठिनाई होने लगी तो वह छत पर पढ़ने लगी। वहाँ हवा भी थी और चाँद की चाँदनी भी। उसने खूब पढ़ाई की, सब चीजें दोहरा ली। फिर सो गई।

अगले दिन पेपर करके आई। पर उसे चिन्ता थी पास होगी कि नहीं?

कुछ दिन बाद परीक्षा का परिणाम आया तो वह पास हो गई। उसे बहुत खुशी हुई लेकिन उसके मम्मी–पापा को उससे भी ज्यादा खुशी हुई।

वह दिन उसकी जिन्दगी का सबसे अच्छा दिन था।

नन्दिनी, 11 वर्ष, कक्षा–5

वर्षा, कक्षा 3, खेरपुर

याद की धूप छाँव में

खेती

मुझे खेती करना बहुत अच्छा लगता है। अलग–अलग मौसम में अलग खेती की जाती है। खेतों में गेहूँ, बाजरा, मूँगफली, सब्जियाँ आदि। खेतों में हम पौधों को छोटे से बड़े करते हैं। उनमें पानी देते हैं, खाद देते हैं, गोड़ते हैं और अच्छे से देखते हैं। फिर पौधे बड़े हो जाते हैं तो उनमें फूल आने लगते हैं। हर सब्जी के अलग–अगल रंग के फूल आते हैं। हम फूलों के पौधे भी लगा सकते हैं। खेतों में हमें हरियाली अच्छी लगती है और उसमें खेलना भी। खेतों में से हम अपने जानवरों के पेट भर देते हैं। जैसे घास से और हरीभरी सब्जियों के पत्तों से। खेतों से हम अपना भी पेट भरते हैं। खेतों में तरह–तरह के जानवर दिखाई देते हैं जैसे बकरी, गाय, भैंस और पक्षी भी। बरसात में जब हम खेतों में जाते हैं तो वहाँ बहुत सारे हरे भरे पेड़ों में से पानी टपकता दिखाई देता है।

पूजा योगी, 15 वर्ष, कक्षा 10, उमंग, कुण्डेरा।

मनीषा बैरवा, पुस्तकालय फेलो, फरिया–कटार।

लेकिन

हम पहले हमारे गाँव में रहते थे। बाद में हमने गाँव से दूर हमारे खेत के पास घर बना लिया। वहाँ पर मेरे काका का घर भी था लेकिन मेरे काका का घर दूर था। मैं हमारे घर के पीछे खेला करता था। मैंने वहाँ पर साफ जगह कर रखी थी। वहाँ पर मधुमक्खी का एक छाता था।

एक रात अचानक मेरी नींद खुली। मुझे किसी जानवर की आवाज आ रही थी। मैंने मेरे घर के पीछे देखा। वहाँ एक भालू मधुमक्खी का छाता खा रहा था। मैं बहुत डर गया और मैं वापस आकर बिस्तर पर सो गया।

सुबह मैं उठा तो मैंने मेरे पापा से बोला कि रात मुझे अपने घर के पीछे भालू दिखा था। मेरा पापा बोला कि वह तेरा सपना होगा।

मुझे भी यही लग रहा था लेकिन मैं जब खेलने गया तो मुझे वहाँ मधुमक्खी का छाता नीचे जमीन पर दिखा। और जमीन पर भालू के पंजे के निशान भी थे। मैं बहुत डर गया। मैं वापस घर आ गया। अब मैं कभी भी घर के पीछे खेलने नहीं जाता हूँ।

राहुल गुर्जर, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिर्राजपुरा।

शिक्षा के ग्रामीण केन्द्र की ओर

उमंग

सवाईमाधोपुर के हमीर चौराहे से आज मैं पूरब की ओर गया। पहली मावठ, जाड़े की ऋतु की पहली बारिश हो चुकी थी। काली शॉल से सिर और कानों को ढक लिया था। लाल झोला कंधे पर लटका था। रणथम्भौर अभयारण्य के किनारे की सड़क पर साथी शिक्षक अशोक जी की मोटरसाइकिल हल्के कोहरे को चीरती हुई दौड़ रही थी, जिसके पीछे मैं बैठा था। अगर हम उमंग केन्द्र पर न रुकते और चलते ही जाते तो आगे कुछ ही दूरी पर बह रही बनास नदी की भोर जा देखते। लेकिन हम उमंग केन्द्र पर पहुँचे, उमंग की लड़कियाँ आ चुकी थी। वे धुँधली धूप में बैठी पढ़ रही थीं।

रणथम्भौर जंगल के पहाड़ों की तलहटी से कुछ दूरी पर बसे छोटे से गाँव जगनपुरा से खेतों की ओसभरी घासों और गीले कच्चे रास्तों में पैदल–पैदल चलकर वे आयी थीं। वे सभी नवीं–दसवीं में पढ़ने वाली उमंग उम्र की लड़कियाँ हैं। किसान परिवारों से आयीं ये लड़कियाँ घर का कामकाज करके आयी हैं और लौटकर खेतों में काम करेंगी। मैं पहली बार उनके साथ लेखन पर कुछ काम करने आया हूँ और वे पहली बार परीक्षा के सवालों के बजाय कुछ लिखने वाली हैं।

'जब हम लिखें तो हमारा देश और काल भी उसमें आना चाहिए। हम जहाँ रह रहे हैं, वही हमारा देश है तो वह कैसा है? हम जिस समय में जी रहे हैं, वही हमारा काल है, तो वह कैसा है।' मैंने उनसे कहा।

'ठीक है।' वे बोलीं।

'अच्छा तुममें से किस–किसने अपने जिले से बाहर की दुनिया देखी है?' मेरे ऐसा पूछने पर दो तीन लड़कियों ने टोंक, लालसोट आदि कस्बे देखने के बारे में बताया। उनमें से अधिकांश अपने आसपास के गाँवों से दूर कभी नहीं गई थी।

हमने कहीं जाने की कल्पना का सुख उठाने के लिए बात की कि जिले से बाहर अगर हम जाएँ तो अपने राज्य के किसी दूसरे जिले में पहुँच जाएँगे। राज्य से बाहर जाएँ तो अपने देश के किसी दूसरे राज्य में पहुँच जाएँगे। और देश से बाहर जाएँ तो, धरती के किसी दूसरे देश में पहुँच जाएँगे। और धरती से बाहर जाएँ तो...

फोटो – ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के संग्रह से।

मेरे ऐसा कहने पर हँसने खिलखिलाने लगीं।

हम किसी दूसरे ग्रह पर पहुँच जाएँगे। या पृथ्वी के ग्रह के उपग्रह चाँद पर। और दूसरे ग्रहों के भी अपने चाँद हैं। ऐसी ही और भी बातें करते हुए मैंने महसूस किया कि उनमें भाषा का रस लेने की कितनी जबरदस्त क्षमता है।

'चलो हम लौट आते हैं, अपनी जगनपुरा की ढाणी में। और अब लिखना शुरू करते हैं। आज तुम सबकी सुबह कैसी रही उसी के बारे में लिखो। रातभर की नींद के बाद आँख खुली तब से लेकर उमंग केन्द्र पर आने तक के समय के बारे में लिखो। वह कैसा रहा, क्या–क्या आवाजें सुनीं, क्या देखा, क्या महसूस किया, वही सब लिखो।' मैंने कहा और लिखने के लिए कागज दे दिए। कागज के पूरब में उन्होंने सुबह लिख कर दी, वे कुछ इस तरह दिखाई–सुनाई दे रही थीं, वे कुछ इस तरह के रंग की थी–

(प्रभात)

1

धीरे–धीरे मेरी आँख खुली। पहली आवाज जो सुनाई दी वो आवाज मेरे भाई की थी। वो आवाज मधुर और प्यारी सी थी–'उठ बहना चाय निकलने वाली है।' मेरा मन उठना तो नहीं चाह रहा था लेकिन इतनी प्यारी आवाज से मैं एकदम से उठ गई और मैंने उसके गालों को स्पर्श किया और चाय पी। मेरी मम्मी कुछ काम कर रही थी। मैंने पानी लेकर अपना मुँह धोया और पानी लेने चली गई। मोटर चल रही थी। खलल–खलल बहते पानी की आवाज इतनी सुंदर और साफ–साफ सुनाई दे रही थी। मेरे हाथ पैर पानी में थे और नजर आसमान में सूरज की तरफ। सूरज निकल रहा था पीला–पीला, इतना सुंदर जैसे कोई आम हो।

फिर अचानक मुझे जो आवाज सुनाई दी वो आवाज मेरी मम्मी की थी। मेरी मम्मी बोली–'उठ घर चल। यहीं बैठी रहेगी क्या?' मैं घर आ गई। घर पर मेरे पापा ने कहा–'बेटा उठ गई?'

'पापा मैं उठकर पानी भी ले आई।' मैंने कहा।

मेरे पापा नहा धोकर तैयार होकर बैठै थे जैसे उन्हें नौकरी करने जाना हो। मेरी मम्मी ने मुझे कुछ काम बताया। वैसे तो मैं काम नहीं करना चाहती थी किन्तु मेरी मम्मी ने मुझे इतने प्यार से बताया कि मेरा मन खुश हो गया कि मम्मी इतने प्यार से बात कर रही है और मैं वो काम करने के लिए गई।

फिर मेरा भाई ट्रैक्टर लेकर आया। उनसे मैंने कहा कि इस ट्रैक्टर को यहाँ मत रोको। थोड़ा पीछे कर दो, मुझे काम करना है।'

मेरा भाई हँसकर मस्ती से बोला–'तू ही ले दे इसे पीछे।'

मैंने कहा–'मुझे क्या चलाना आता है?'

'मैं बताता हूँ ना।' उसने कहा।

मैंने कहा–'तू ले दे ना भाई!'

मेरे भाई ने मुझसे इतने प्यार से बातें की कि मेरा मन खिल उठा और ऊपर से मेरी भाभी भी सुबह–सुबह मुझसे मस्ती करने लग गई। मेरा मन बहुत खुश हुआ। मेरी सुबह इतनी सुंदर थी।

मानसी मीना, कक्षा–10

2

मम्मी की आवाज से मेरी नींद खुली। जब मैं उठी तो मेरे भाई ने मुझसे बोला, 'तुम तो ऐसे कहती हो कि मैं ज्ल्दी उठूँगी और पढ़ाई करूँगी।'

पर आज मेरा मन जल्दी उठने का इसलिए नहीं था क्योंकि आज स्कूल की छुट्टी थी और मैं देर तक सोना चाहती थी लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मेरी मम्मी ने कहा कि 'चाय पी ले नहीं तो मैं ही पी जाऊँगी।' फिर मैंने चाय पी ली तो मम्मी ने कहा कि 'तुम बाहर जाकर चिड़ियाओं को दाना डाल दो।' मैंने चिड़ियाओं को दाना डाला। जब वे खाने लगी तो मुझे बहुत अच्छा लगा। फिर मुझे रात की एक बात याद आई– 'मेरी मम्मी ने कल देवउठनी की पूजा की थी और घी के दीए से काजल पाड़ा (निकाला) था तो मेरे ताऊ के लड़के ने काजल से मेरे पूरे मुँह को काला कर दिया तो मैंने भी उसका मुँह काला कर दिया था।'

सुबह पौने नौ बजे यहाँ आना था तो मुझे मेरी दोस्त मनीषा बुलाने के लिए आई। मैंने मेरी दोस्त से कहा कि 'तुम 10 मिनट रुको मुझे थोड़ा वक्त लगेगा।'

उसने कहा–'ठीक है।'

हम निकल रहे थे तो मेरे बड़ी दीदी ने कहा कि 'खाना बन गया है, खाती जाओ।'

मैंने कहा कि 'लेट होगा। हमको जाना है आज जल्दी।'

फिर हम दोनों दोस्त बातें करते मस्ती करते आ रहे थे।

यहाँ आकर हमने कहा कि 'सर आज हम सब बाहर ही बैठेंगे।'

सर ने कहा कि 'बाहर ही बैठो।'

फिर मेरी दोस्त मनीषा ने कहा कि 'सर मुझे भूख लगी है। मेरे लिए कचौड़ी लेकर आओ।'

सर ने कहा, 'घर पर खाना खाकर आती ना?'

फिर सब लड़कियों ने कहा कि 'हाँ सर! आप ही लेकर आओ।'

सर को बिल्कुल ही मजबूर कर दिया तो सर को जाना ही पड़ा।

मीनाक्षी प्रजापत, कक्षा–10

3

आज मैं उठी तो मैंने पहले सोचा कि मैं थोड़ी पढ़ाई कर लूँ। फिर सोचा कि आज तो छुट्टी है आराम से सो लेती हूँ।

लेकिन छह बजे तो उठना ही पड़ा क्योंकि मम्मी की कमर में दर्द था इसलिए मुझे गोबर की तगारी उठाकर ऊपर डालनी थी। फिर मैंने उठकर उसे ऊपर छत पर डाला। सर्दी लग रही थी तो मैं आग के पास बैठ गई। बाद में गोलमा के घर गई जो मेरे घर के पास ही में रहती है और मेरी कक्षा में मेरे साथ पढ़ती है। मैंने उसके घर जाकर उससे पूछा कि

'जगनपुरा स्कूल म ें चलना है, तुम चलोगी क्या?'

उसने कहा, 'तुम तैयार हो

जाओ। हम थोड़ी देर में चलेंगे।'

मुझे दादाजी ने कहा कि तुम्हारे काकाजी के पास कॉल करो। उन्हें पढ़ना लिखना नहीं आता है इसलिए उन्होंने मुझसे कॉल करने के लिए कहा। बाद में मुझे एक आवाज

सुनाई दी। वो आवाज गोलमा की थी। उसने कहा–'चलना नहीं है क्या वरना मैं चली जाऊँगी। क्योंकि मैं उसे हमेशा लेट करती हूँ।'

रास्ते में मेरी दोस्त मीनाक्षी का घर आता है। मैं उनके घर उसे बुलाने चली गई। तब उसने मुझे बताया कि रात मुझे काजल बहुत ज्यादा लगा दिया था तो वह साबुन से मुँह

धो रही थी। फिर हम 4

बातें करते–करते जगनपुरा स्कूल में आ गये।

मनीषा मीना, कक्षा–10

4

चार बजे का अलार्म बजा तो सोचा कौन उठेगा, मैं अलार्म बंद करके सो गई। फिर पाँच बजे उठकर मुँह धोया और पढ़ने बैठ गई। मेरी बुआजी बोलती है कि 'सुबह उठकर पढ़ते हैं तो पढ़ा हुआ याद रहता है।' मेरी बुआजी बोलती है वो सच है। हकीकत में मुझे वह याद रहा। फिर मैं पढ़कर नहाने गई। तैयार हो गई। मेरी मम्मी बोली–

'खाना खा ले। मैं खाना खाने बैठ गई। आज मेरी मम्मी ने पालक की कढ़ी बनाई थी। बाजरे की रोटी के साथ खाने में ही मजा आ गया। एकदम जबरदस्त मजा आ गया।

दो तीन दिन पहले मेरी मौसी आई थी। वह बहुत सारे अमरूद लाई थी। उसमें से आधे तो खत्म हो गये और आधे रखे हैं। मैं एक अमरूद निकाल कर खाते हुए आ रही थी तो एक औरत भी मेरी तरह हाथ में अमरूद लेकर खाती हुई आ रही थी। मैंने उससे कहा–'तुम आज भी मेरी तरह अमरूद खाती आ रही हो।'

वह बोली–'काम पर जाने के लिए लेट हो रहा है इसलिए चलते हुए खाना पड़ता है।'

मैंने कहा–'ठीक है जाओ।'

वो उधर चली गई और मैं ग्रामीण शिक्षा केन्द्र जगनपुरा पहुँच गई।

प्रियंका मीना, कक्षा–9

फोटो – ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के संग्रह से।

5

अचानक मम्मी ने आवाज दी तो आँख खुल गई। मम्मी चाय बना रही और मेरा भाई रो रहा था। मैंने उसे चुप किया। उसके बाद मम्मी ने हमें गरम पानी दिया। फिर मेरे मन में आया कि रात को मैंने मेरी बहन और भाई को एक परी की कहानी सुनाई थी। ऐसा ही मुझे सपना भी आया था। मेरी बहन घर का काम कर रही थी। मम्मी झाड़ू निकाल रही थी। उधर सूरज निकल रहा था। मौसम बिल्कुल साफ था। हरे–भरे पेड़–पौधे ओस से भरे थे। इतना सुंदर दृश्य देखने में मजा आ गया।

(नाम नहीं लिखा)

6

आज मैं सुबह पाँच बजे उठी तो मेरी दादी ओखली में अदरक कूट रही थी। मैं मेरी दादी के पास गई। मेरी दादी ने मुझसे कहा–'बेटा चाय पी ले।'

मैंने चाय पीकर कहा–'वाह क्या चाय है।'

तभी मम्मी ने कहा कि 'कोमल मेरे साथ पानी लेने चल।'

सुबह का समय तो अच्छा गया लेकिन अभी पूरा दिन पड़ा है पता नहीं कैसा जायेगा।

आज मेरे से सर ने कहा कि 'तुम सेंटर पर क्यूँ नहीं आती?'

मैंने कहा–'सर! मेरे को टाइम ही नहीं मिलता इसलिए नहीं आती हूँ।'

कोमल ढ़ोली, कक्षा–9

7

आज मैं जब सुबह उठी तो मेरी दादी रोटी बनाने के लिए परात बजा रही थी। उस आवाज को सुनकर मेरी आँखे खुल गई थी। फिर मैंने अपने बिस्तर उठाये तो मेरे दिमाग में विचार आया कि मैं आज स्कूल जाकर अपनी दोस्त से अच्छी–अच्छी बातें करूँगी। उसे खूब हँसाऊँगी। फिर झाड़ू निकाला।

दादी नहाकर काम पर चली गई। मैंने उसके कपड़े सुखाये और कपड़ों को सुखा कर मैं दूध लेने चली गई और लाकर गर्म किया। बर्तन धोये। फिर मुझे मेरी दोस्त बुलाने आ गई और मैं यहाँ आ गई।

यहाँ आई तो मैडम जी ने कहा कि 'तुम यहाँ पढ़ने क्यूँ नहीं आती हो?'

मुझसे ही नहीं सबसे उन्होंने पूछा फिर उन्होंने जो बातें की मुझे बहुत अच्छा लगा। फिर एक सर आये उन्होंने हमसे बातें की। उनका बात करना मुझे बहुत अच्छा लगा। उन्होंने सबको दुनिया के बारे में समझाया। सबने उनकी बात ठीक से सुनी।

नेहा सोनवाल, कक्षा–9

सानिया

8

जब मैं सुबह उठी तो ऐसा महसूस हुआ कि मैं किसी जगह घूमकर आई हूँ। मैंने वहाँ चीता, हाथी, मगरमच्छ, सफेद कबूतर, हिरण, जंगली सुअर आदि बहुत से जानवर देखे। बहुत सी मनमोहक तितलियाँ फूलों पर मंडरा रही थी। एक जगह एक हिरण के पैर में लग रही थी तो हमने उसके पट्टी की और उसको दवाई भी लगाई। वह उठ खड़ी हुई तो अच्छा लगा।

लक्ष्मी मीना, कक्षा–9

फोटो – ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के संग्रह से।

फोटो – ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के संग्रह से।

9

मैं जब सुबह उठी थी तो मेरे पास मेरी बकरी बैठी थी। वह मह मह मह कर रही थी। जब मैंने उसके ऊपर हाथ फेरा तो उसके पेट से खून निकल रहा था। मैंने उसके मरहम पट्टी की फिर उसके लिए दवाई लाई फिर मैंने उसके लगा दी। थोड़ी देर बाद मेरी मम्मी उसके लिए हरी घास लाई। हमने उसे खिला दिया। थोड़ी देर बाद वह बैठ गई। फिर मैंने खाना खाया। फिर मैं पढ़ने लगी तभी बाहर से बिल्ली ने आकर दही के कटोरे को नीचे गिरा दिया। फिर वह ददी को बड़े मजे से खा रही थी।

मेरी मम्मी आई और बिल्ली को मारी तो बिल्ली म्यां–म्यां करने लगी।

मैं तैयार होकर आ रही थी तो एक गाड़ी आई और मेरे ऊपर कीचड़ उछाल दिया। मैं वापस घर गई तो मेरे नानाजी आ गये थे। मैंने उसने नमस्कार किया। थोड़ी देर बातचीत की।

वंदना मीना, कक्षा–9

10

आज मैं जब सुबह उठी तो मम्मी ने बोला कि 'मैं तुझे उठाना भूल गई थी।'

सुबह पढ़ने के लिए मैं मम्मी को उठाने के लिए बोल के सोई थी। इसलिए आज मेरे लिए पहली आवाज मम्मी की ही थी।

मैं साढ़े पाँच बजे उठ गई थी। थोड़ी देर पढ़ाई की फिर चाय पी फिर वापस से गणित के सवाल निकालने लगी। आज हमें यहाँ पौने नौ बजे बुलाया गया था तो मैं यहाँ के लिए रेडी होकर आ रही थी। एक लड़की हमारे साथ पढ़ती है जो साइकिल से आ रही थी। उसने बोला– 'तू भी चलेगी साइकिल पे?'

मैंने हाँ भरी।

तो वो बोली– 'तू साइकिल लेके चल।'

वो पीछे बैठ गई।

यहाँ आकर मैंने लैपटॉप चलाया। फिर हमारे साथ की लड़कियाँ भी आ गई। हम चटाई बिछाके बैठ गये। सर ने हमें हमको देश काल के बारे में लिखने के लिए बोला। हम अब इसमें लिख रहे हैं कि इसे बारे में मुझे आज बहुत अच्छा लग रहा है। हमने आज बहुत कुछ सीखा। मुझे यह स्कूल जब से यहाँ पढ़ी हूँ बहुत अच्छी लगती है।

मीनाक्षी मीना, कक्षा–10

11

मैं सुबह छह बजे उठी और मैंने देखा कि मेरे घर में कचरा ही कचरा हो रहा था। फिर मैंने झाड़ू निकाली और अच्छे से साफ–सफा. ई करके खाना बनाया। घर का काम करके मैं जगनपुरा की स्कूल में पढ़ने चली गई। मैंने देखा कि अभी तक तो कोई लड़की नहीं आई फिर मैंने दौड़ करना चालू कर दी। मैंने मैदान के पाँच चक्कर लगाये।

फिर सर ने बुला लिया। लड़कियाँ भी आ गई। कम्प्यूटर की क्लास में हमको सर ने कॉपी में एक्सल के बारे में लिखाया और फिर कम्प्यूटर में इसके बारे में बताया।

और फिर हमने पेंटिंग बनाई और फिर घर आकर घर का काम करके पढ़कर फिर मैं सो गई।

मीनाक्षी मीना, कक्षा–9

12

सुबह घर का काम करने के बाद मैं नहाने के लिए चली गई। तैयार होने के बाद अपनी दोस्तों के साथ यहाँ पर आ गई। यहाँ की पढ़ाई के बाद हम सरकारी स्कूल में चले जाते हैं। वहाँ से कम्प्यूटर क्लास फिर शाम को घर जाने के बाद हम खाना खाते हैं। खाने के बाद हम थोड़ा घूम लेते हैं या घर का काम कर लेते हैं। रात को नौ बजे तक पढाई करते हैं फिर हम सो जाते हैं।

पूजा मीना, कक्षा–9

फोटो – ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के संग्रह से।

13

सुबह मैं और मनीषा, मानसी के पास आ गई। मानसी चपरी पापड़ी खा रही थी। वह आई फिर हम वहाँ से चले। हमने अपने मन की बात मानसी को बताई। मन बहुत प्रसन्न हुआ। और यहाँ सेंटर पर पहुँचे। यहाँ एक चर्चा चर्चा चल रही थी आज की सुबह कैसी रही? तो यह मैंने अपने बारे में लिखा कोई गलती हुई है तो क्षमा करना।

गोलमा मीना, कक्षा 10

14

जब मैं सुबह उठती हूँ तो सुनती हूँ कि मेरे को आवाज लग रही है। मेरी सुंदर मम्मी चाय बना रही है। मैंने चाय पी और मेरे भाई को भी चाय पिला दी।

खुशी बानो, कक्षा–9

सविता मीना, कक्षा–3, पुस्तकालय –जगनपुरा

बात लै

चापड़े पापड़े पर जा पड़े

बुढ़िया के पास दो बैल थे और बुढ़ापे के लिए बचाकर रखा थोड़ा धन था। धन क्या था उसके खुद के ही पुराने गहने थे जिन्हें वह घर में छुपाकर रखती थी। चार चोरों की उसके उसी धन पर नजर थी।

बुढ़िया अनुभवी और चतुर थी। रोजाना धन को रखने की जगह बदल देती थी। चोरों की दाल नहीं गल रही थी। एक रात चोर उसके घर में घुसकर धन खोदने लगे।
घर के बाहर आँगन में सो रही बुढ़िया की नींद खुल गई। वह समझ गई –'चोर ही हैं और कोई नहीं।' खाट में पड़ी–पड़ी ही बोली–'आज तो मुझे चोरों का कोई डर नहीं। धन तो पोटली में बाँधकर पीपली में लटका ही दिया है।'

चोरों ने धन का पता सुना तो उनकी आँखों में चमक आ गई। वे चुपके–चुपके गए। पेड़ में चढ़ गए। अँधेरे के बावजूद एक डाल में लटकी पोटली दिख गई। वे चारों उस पोटली को ऐसे खोलने में जुट गए कि जैसे कौन जल्दी खोलता है। तभी उनके चारों ओर भन्न भन्न की आवाजों का शोर मच गया। क्योंकि वह पोटली नहीं, मधुमक्खी का छत्ता था। मुधमक्खियों ने चोरों को काटा तो वे चेहरों को मलते हुए एक के बाद एक लदर–पदर गिर पड़े। बुढ़िया के बैल पीपल के नीचे बैठे थे। चोर उन पर जाकर गिरे तो वे चमक कर खड़े हो गए।

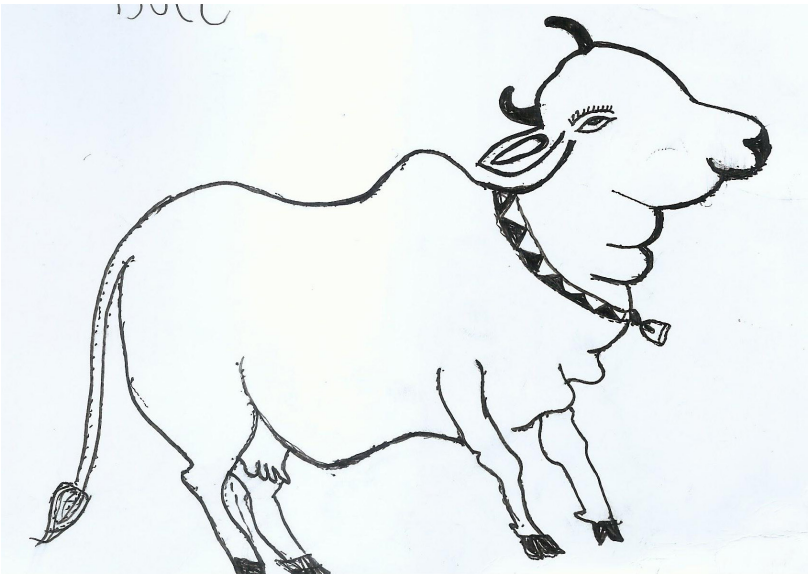

चीत लै

बुढ़िया अपनी खाट से खड़ी होकर जोर से बोली–'
'चापड़े पापड़े
छोड़ना नहीं चोरों के कापड़े।'
दोनों बैल पूँछ फटकार कर तैयार हो गए चोरों को खदड़ने के लिए।
चोर भागते जा रहे थे और कहते जा रहे थे–

रोक ले माई तेरे
चापड़े पापड़े
हम तो पहले ही जा पड़े।

बुढ़िया ने अपने चापड़े पापड़े बैल बुला लिए।

चोरों को खदेड़कर बैल बहादुरों की तरह बुढ़िया के पास लौट रहे थे।

मीनाक्षी प्रजापत, कक्षा – 9, राँवल। पुनर्लेखन – प्रभात।

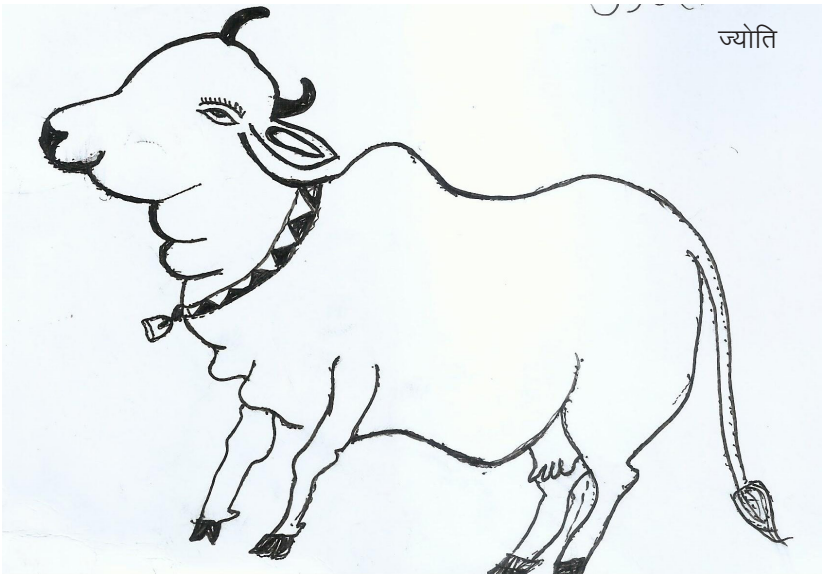

मधुमक्खी से बातचीत

एक दिन श्यामपुरा में कुँए के पास मुझे मुझे एक मधुमक्खी मिल गई। मैने कहा –'नमस्ते।' वह जिंग–जिंग की आवाज करती हुई इधर से उधर चक्कर काटती रही और मुझसे बात भी करती रही। उसने अपनी जिंग–जिंग की आवाज में मुझसे कहा–'नमस्ते।' मैं तो उसका नाम जानता था लेकिन वह शायद मेरा नाम न जानती हो। मैंने उसे अपना नाम बताया और पूछा–'मेरा नाम प्रेमचंद है। आजकल आप कहाँ रह रही हो। बड़े दिनों में दिखाई दी हो।'

मधुमक्खी – जंगल के पहाड़ में एक चट्टान में छत्ता बनाने का काम चल रहा है।

प्रेमंचद – गाँव क्यों छोड़ दिया।

मधुमक्खी – गाँव वाले शहद के लिए बार–बार हमारे घर तोड़ रहे थे इसीलिए।

प्रेमंचद – मैंने सुना है आप बेकसूर लोगों को भी काट लेती हो?

मधुमक्खी – तुम बड़े सयाने मालूम पड़ते हो। लोग हमारे घर उजाड़ते हैं ये तुमने नहीं सुना। हम काट लेती हैं ये तुमने बड़ी जल्दी सुन लिया। लोग हमारे घर उजाड़ते हैं तो हम अपने बचाव के लिए काटेंगी भी नहीं क्या?

प्रेमंचद – आपके परिवार में और कौन–कौन है?

मधुमक्खी – परिवार में सब हैं चाचा, चाची, मम्मी मौसी, भाई–भाभी, मामा–मामी सब।

प्रेमंचद – सुना है आपके डंक में जहर होता है। आपके काटने से इंसान के शरीर में सूजन आ जाती है।

मधुमक्खी – प्रेमचंद तुम सुनते बहुत हो। थोड़ा सोच भी लिया करो। हमसे ज्यादा तो इंसान ही जहरीले हैं।

प्रेमंचद – इंसान तो तुम्हें पालने भी लग गए। मैंने मधुमक्खी पालन के बारे में सुना है।

मधुमक्खी – जो पालतू बन जाती हैं वे गुलाम मधुमक्खियाँ हैं। वे गुलामों की तरह इंसानों के लिए काम करती है। इंसान अंत में उन्हें मारने के सिवा उन्हें कुछ नहीं दे सकता।

प्रेमंचद – मैं कभी आपके कुछ काम आ सकूँ तो मुझे अच्छा लगेगा।

मधुमक्खी – तुम क्या काम आओगे हमारे? क्या करते हो?

प्रेमंचद – मैं शिक्षक हूँ। बच्चों को पढ़ता हूँ।

मधुमक्खी – तो बच्चो समझाओ कि हमारे साथ सहानुभूति से पेश आएँ।

प्रेमंचद – कोशिश करूँगा।

मधुमक्खी – अलविदा।

(मधुमक्खी जिंग–जिंग करते हुए उडते–उड़ते दूर चली गई। इतनी दूर की दिखाई देना बंद हो गई।)

प्रेमचंद, शिक्षक, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र।

बतरस

मच्छर से बातचीत

ज्योति – आपका नाम?
मच्छर – धाकड़ सिंह।
ज्योति – ये कैसा नाम है?
मच्छर – अच्छा नाम है। लोगों में मेरी धाक है। लोगों को काटता हूँ। उनका खून पीता हूँ। लेकिन उतना नहीं, जितना आदमी, आदमी का पीता है।
ज्योति – तुम लोगों का खून क्यों पीते हो?
मच्छर – क्योंकि उनमें खून है। पानी तो हमारे यहाँ ही काफी है। खून पीने में अच्छा लगता है।
ज्योति – खून पीते समय कई बार, तुम्हारे दोस्त, परिवार वाले मारे भी जाते हैं।
मच्छर – जीने की लड़ाई में कभी–कभी मरना भी पड़ सकता है। उसमें क्या है? लेकिन देखो मैं इंटरव्यू देने के लिए जिन्दा हूँ। अर्ज किया है –
यथा नाम तथा गुण
धाकड़ सिंह की एक ही धुन
तुन तुन तुन
तुन तुन तुन
ज्योति – क्या बात है! क्या बात है! बहुत बढ़िया। अब अगर मैं तुम्हें मार दूँ तो?

मच्छर – तुम मुझे नहीं मार सकती। क्योंकि अब मैं तुम्हारे परिवार का हिस्सा हूँ।
ज्योति – वो कैसे?

मच्छर – थोड़ी देर पहले ही मैंने तुम्हारे सारे घरवालों का खून पिया। मेरी रगों में भी अब वही खून दौड़ रहा है।

ज्योति – ये क्या बकवास है?
मच्छर – अच्छा! हम करें तो बकवास और तुम करो तो रेडियो संवाद।
वा जी वा
कहते हुए मच्छर उड़ गया।

ज्योति गौतम, शिक्षिका, उमंग केन्द्र, शेरपुर।

भाषा की सहेलियाँ,

बूझो यार पहेलियाँ

1. ऐसी कौनसी चीज है जिसे हम पानी के अंदर खाते हैं?
2. अँधेरे कमरे में मोमबत्ती, लालटेन और दीया एक साथ रखे हैं। सबसे पहले क्या जलाओगे?
3. जब भी आए होश उड़ाए फिर भी हम कहते कि वो आए।
4. ऐसी कौनसी चीज है जो मिट जाती है पर उसकी परछाई नहीं होती।
5. हरा आटा, लाल परांठा।
6. ऐसी कौनसी चीज है जो हमें आती है पर हम उसे छू नहीं सकते।

सौरभ गुर्जर, कक्षा–8, आदर्श गुर्जर 11 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिर्राजपुरा।

अधूरी कविता पूरी की गई है–

1

कितनी सुंदर है ये कार
चला रहा है रामवतार
रामवतार के बच्चे चार
छोटी पड़ गई उसकी कार।

लक्ष्मी बैरवा, श्यामपुरा।

2

रामवतार की कार पंचर
उसमें बैठे भालू बंदर
भालू बोला– मैं चलाऊँगा
बंदर बोला– मैं चलाऊँगा

भूमिका, श्यामपुरा।

(ऐसा लगता है ये कार श्यामपुरा में ही पंचर होकर खड़ी हो गई थी। तभी केवल वहीं के लोगों ने ही कविता आगे बढ़ायी है।)

पहेलियों के जवाब

1.गोता 2. माचिस 3. नींद 4. मांडने 5. मेंहदी 6. सपना।